

॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

स्पर्धतेऽस्मत्सततं देवराजेन नित्यदा ॥ वासवोऽपि मरुत्तेन स्पर्धते पांडुनंदन ॥ १५ ॥ शुचिः सगुणवानासीन्मरुत्तः पृथिवीपतिः ॥ यतमानोऽपि यं शक्रो न विशेष  
यतिस्मह ॥ १६ ॥ सोऽशक्रवन्विशेषाय समाहूय बृहस्पतिं ॥ उवाचे दंवचो देवैः सहितो हरिवाहनः ॥ १७ ॥ बृहस्पते मरुत्तस्य मास्म कार्षीः कथंचन ॥ देवं कर्माथ  
पिथं वा कर्त्ता सिममचेत्त्रियं ॥ १८ ॥ अहं हि त्रिषु लोकेषु सुराणां च बृहस्पते ॥ इंद्रत्वं प्राप्तवानेको मरुत्तस्तु महीपतिः ॥ १९ ॥ कथं ह्यमर्त्यं ब्रह्मं स्वं याजयित्वा सुरा  
धिपं ॥ याजयेद्मृत्युसंयुक्तं मरुत्तमविशंकया ॥ २० ॥ मां वा वृणीष्व भद्रं ते मरुत्तं वामहीपतिं ॥ परित्यज्य मरुत्तं वा यथाजोषं भजस्व मां ॥ २१ ॥ एवमुक्तः सकौर  
व्यं देवराज्ञा बृहस्पतिः ॥ मुहूर्त्तमिव संचित्य देवराजानमब्रवीत् ॥ २२ ॥ त्वं भूतानामधिपतिस्त्वयिलोकाः प्रतिष्ठिताः ॥ न मुचेर्विश्वरूपस्य निहंता त्वं बलस्य च ॥  
॥ २३ ॥ त्वमाजहर्थे देवानामेको वीरश्रियं परां ॥ त्वं विभर्षिभुवं द्यां च सदैव बलसूदन ॥ २४ ॥ पौरोहित्यं कथं कृत्वा तव देवगणेश्वर ॥ याजयेयमहं मर्त्यं मरुत्तं पा  
कशासन ॥ २५ ॥ समाश्वसिहि देवेन्द्र नाहं मर्त्यस्य कर्हि चित् ॥ ग्रहीष्यामि सुव्यं जज्ञे शृणु चेदं वचो मम ॥ २६ ॥ हिरण्यरेतानोणाः स्यात्परिवर्त्तं ते मे दिनी ॥ भासं  
तु नरविः कुर्यान्न तु सत्यं च लेन्मयि ॥ २७ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ बृहस्पतिवचः श्रुत्वा शक्रो विगतमत्सरः ॥ प्रशस्यै न विवेशाथ स्वमेव भव नंतदा ॥ २८ ॥  
इति श्री महाभारते आश्वमेधिके पर्वणि अश्वमेधिके पर्वणि संवर्त्तं मरुत्तीये पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ ६३ ॥ व्यास उवाच ॥ अत्राप्युदाहरंतीम  
मिति हासं पुरातनं ॥ बृहस्पते श्रुत्वा दं मरुत्तस्य च धीमतः ॥ १ ॥ देवराजस्य समं कृतमांगिरसे न ह ॥ श्रुत्वा मरुत्तो नृपतिर्यज्ञमाहारयत्परं ॥ २ ॥ संकल्प्य मनसा य  
ज्ञं करंधं मसुतात्मजः ॥ बृहस्पतिमुपागम्य वाग्मीव च नमब्रवीत् ॥ ३ ॥ भगवन्मया पूर्वमभिगम्य तपोधन ॥ कृतोऽभिसंधिर्यज्ञस्य भवतो वचनादुरो ॥ ४ ॥ त  
महं यष्टुमिच्छामि संभाराः संभृताश्रमे ॥ याज्योऽस्मि भवतः साधो तत्प्राप्नुहि विधत्स्व च ॥ ५ ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ न कामयेयाजयितुं त्वामहं पृथिवीपते ॥ वृत्तो  
स्मिं देवराजेन प्रतिज्ञातं च तस्य मे ॥ ६ ॥ मरुत्त उवाच ॥ पिथ्यमस्मि तव क्षेत्रं बहुमन्ये च ते भृशं ॥ तवास्मि याज्यतां प्राप्तो भजमानं भजस्व मां ॥ ७ ॥ बृह  
स्पतिरुवाच ॥ अमर्त्ययाजयित्वा हं याजयिष्ये कथंचन ॥ मरुत्तगच्छ वामावा निवृत्तोऽस्य घयाजनात् ॥ ८ ॥

सर्वैरुत्तमैः संयोगकथयन्नादमुत्तेनपाराणसीमाहृत्यैव सूचयति ॥ ५ ॥ इति ॥ ३ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥